Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 11, November-2019, ISSN 2230-7540

अटल बिहारी वाजपेयी: एक विश्वबिहारी काव्य-प्रतिभा

जय प्रकाश शर्मा[1*], डॉ. के.के.चतुर्वेदी[2]

[1] एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.

[2] प्राध्यापक, शासकीय माधव महाविद्यालय, चंदेरी

***सार** - अटल बिहारी वाजपेयी (25 दिसंबर 1924-16 अगस्त 2018) एक भारतीय राजनेता थे, जिन्होंने भारत के प्रधान मंत्री के रूप में तीन कार्यकालों की सेवा कीः पहली बार 1996 में 13 दिनों की अवधि के लिए, फिर 13 की अवधि के लिए। 1998 से 1999 तक के महीने, और अंत में, 1999 से 2004 तक पूर्ण कार्यकाल के लिए। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सदस्य, वह पहले भारतीय प्रधान मंत्री थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के सदस्य नहीं थे, जिन्होंने सेवा की थी। कार्यालय में पूरे पांच साल का कार्यकाल। इस लेख में अटल बिहारी जी की काव्या शैली की अध्यवयन किया गया है*

***कीवर्ड** - अटल बिहारी वाजपेयी, विश्वबिहारी, काव्य-प्रतिभा*

----------X----------

परिचय

मध्यप्रदेश कवियों का खजाना है, तो ग्वालियर कवियों की खदान है, इस खदान से तमाम ऐसे हीरे निकले हैं, जिनकी चमक से लोगों की आँखें चैंधिया गयी हैं, एक ऐसा ही हीरा रीतिकाल में ग्वालियर की खदान से निकला था, युग की पूरी कविता जिसकी लेखनी के नीचे बैठकर लिखी जाती रही थी, कविता का पूरा वायुमंडल उसी के कोरस का विशिष्ट स्वर बनकर रह गया था, मैं महाकवि बिहारी की बात कर रहा हू, रीतिकाल में ग्वालियर की कोख से बिहारी पैदा हुआ था और हमारे काल में अटल बिहारी पैदा हुआ है, धन्य है यह ग्वालियर की भूमि जहाँ बिहारी और अटल बिहारी जैसे कवि-केहरि पैदा होते हैं, बिहारी की कविताओं के लोग आज भी दीवाने हैं, अटल बिहारी की कविताओं ने भी लोगों के दिलों पर अपना नाम लिख दिया है, उनकी कविता सुनाने का अंदाज भी इतना प्यारा, इतना प्रभावशाली है कि लोग उसमें बहने लगते हैं, कविताओं जैसा ही जादू उनके भाषण का है, 'मैनेजमेंट ऑफ वर्ड्स'-'शब्दों का प्रबंधन' जैसा अटल जी के पास है, वैसा किसी दूसरे के पास नही है, जहाँ रामायण की शीतलता की आवश्यकता होती है, वहाँ वे महाभारत का बिगुल नहीं बजाते हैं और जहाँ महाभारत की आवश्यकता पड़ती है वहाँ वे रामायण की चौपाइयाँ नहीं गाते हैं, आज अटल जी बूढ़े हो गये हैं, जीवन के 91 वर्ष वे पार कर चुके हैं, कई दिनों से उन्हें सुनना तो दूर उन्हें टेलीविजन के स्क्रीन पर भी नहीं देखा है, लेकिन उनकी वाणी का प्रभाव भारतीय जन-मानस पर आज भी कायम है, लोग आज भी उनकी कविता सुनना चाहते हैं, लोगों का मन आज भी उनके भाषणों की मूर्च्छना में डूब जाना चाहता है,

एक जमाना हुआ करता था, जब उनके भाषणों को सुनने भीड़ लगा करती थी, जब वे भाषण दे रहे होते थे, शहर की हर गली, हर सड़क उनके भाषण सुनने की ओर मुड़ आती थी, उसका एक ही कारण है कि उनके भाषणों में राजनीति नहीं बोलती थी, राष्ट्रनीति बोलती थी, उनका त्याग बोलता था, उनकी तपस्या बोलती थी, उनकी तपस्या, उनके तप, उनके ताप का ही परिणाम है कि पूरे देश में कमल खिल सका और वे एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन-तीन बार देश के प्रधानमंत्री बन सके, प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने कुछ ऐसे उदात्त, ऐसे पवित्र कार्य किये हैं जिन्हें इतिहास कभी भूलेगा नहीं, पोखरण में परमाणु विस्फोट कर जहाँ उन्होंने विश्व को चैंका दिया था, वहीं हर भारतीय को रोमांचित कर दिया, भारत को सड़क से जोड़ने की योजना का प्रारम्भ उन्होंने किया, नदियों को जोड़ने की योजना भी उनके शासन-काल में बन चुकी थी, वे भारत के ऐसे विरले नेता हैं जिन्होंने विज्ञान में संविधान की तलाश की और श्रेष्ठ वैज्ञानिक को भारत का राष्ट्रपति बनाने में तनिक भी देर नहीं की, काश ऐसे ही प्रधानमंत्री आजादी के बाद से ही भारत को मिले होते, तो भारत आज अमेरिका से भी आगे पहुँच गया होता,

अपने कवि रूप में अटल जी अद्वितीय हैं, जैसे राम ने अवतार लेते ही 'रोदन ठाना' था, उन्होंने ठान लिया था, कि वे

www.ignited.in

रोने से बंद नहीं होंगे, वे सारी जनता को जना देना चाहते थे कि राम का अवतार हो चुका है वैसे ही अटल जी ने जब वे नौवी-दसवीं में पढ़ते थे, 14-15 वर्ष की आयु रही होगी, 'हिन्दू तन-मन' शीर्षक कविता लिख कर जैसे यह घोषणा कर दी थी कि हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू संस्कृति का महा तेज भारत की धरती पर जन्म ले चुका है,

अपने तन-मन, अपने जीवन, अपनी रग-रग को हिन्दू कहकर दहाड़ लगाने वाले ने जब यह देखा कि अपने को हिन्दू कहने में कुछ लोगों के हाड़ काँप जाते हैं, तो उसकी कविता उदग्र हो जाती है, वह उग्र वाणी में उन्हें फटकार लगाते हुए चीख उठती है -

"हिन्दू कहने में शरमाते, दूध लजाते लाज न आती,

घोर पतन है अपनी माँ को माँ कहने में फटती छाती,"

पं. वाजपेयी राष्ट्र के अभिमानी कवि हैं, उनकी कविता में राष्ट्र का गौरव-गान है -

"विश्व-गान कर अगणित गौरव के दीपक अब भी जलते हैं,

कोटि-कोटि नमनों में स्वर्णिम युग के शत सपने पलते हैं,

शत-शत आघातों को सहकर जीवित हिन्दुस्तान हमारा,

जग के मस्तक पर रोली सा, शोभित हिन्दुस्तान हमारा,"

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ, किंतु कटी-फटी आजादी हमें मिली, एक विकलांग आजादी, भारत माता के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये, कवि का हृदय भी जैसे टुकड़े-टुकड़े हो गया था, उसकी कविता विलख पड़ी -

"किंतु आज पुत्रों के शोणित से रंजित वसुधा की छाती

टुकड़े-टुकडे हुई विभाजित बलिदानी पुरुखों की थाती"

खंडित करने वालों ने देश को खंडित तो कर दिया, किंतु अटल जी की देश के प्रति अखण्ड आस्था है, सच्ची आजादी के प्रति अटूट-श्रद्धा है, उनका विश्वास है -

"दिन दूर नहीं खण्डित भारत को पुनः अखण्ड बनायेंगे,

गिल गिल से गारो पर्वत तक आजादी पर्व मनायेंगे,"

अटल जी राष्ट्र के लिए बलिदान होने वाले, स्वतंत्रता के लिए नाना यंत्रणाएँ सहने वाले सपूतों का स्मरण जिस श्रद्धाभाव से करते हैं, वह सभी देशवासियों के लिए अनुकरणीय है, 'उनकी याद करें' कविता की एक-एक पंक्ति हमारी आँखों से सौ-सौ आँसू निकाल लेती है -

"जो वर्षों तक लड़े जेल में, उनकी याद करें

जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें,"

"याद करें काला पानी को

अंग्रेजों की मनमानी को,

कोल्हू में जुट तेल पेरते,

सावरकर से बलिदानी को"

पं. वाजपेयी की कविता किसी कलम घसीट कवि की कविता नहीं है, वह चिन्तन और चेतना के अंश से निकली महाचेतना है, कविता ने जहाँ भी चिन्तन को छुआ है, राष्ट्र-चिंतन की रेखाएँ उद्भाषित हो उठी हैं, कवि का अपने प्राचीन राष्ट्र की संस्कृति और गौरव ग्रंथों पर अपार आस्था है, 'अमर आग है' कविता भारतीय संस्कृति, सभ्यता और वेदों आदि के महत्व पर एक सशक्त रचना है, वे गर्व के साथ कहते हैं -

"पर्णकुटी में पर्णासन पर

कोटि-कोटि ऋषियों-मुनियों ने

दिव्य ज्ञान का सोम पिया था

जिसका कुछ उच्छिष्ट मात्र

बर्बर पश्चिम ने

दया- दान सा

निज जीवन को सफल मानकर

कर पसार कर

सिर आँखों पर घार लिया था

वेद-वेद के मंत्र-मंत्र के

मंत्र-मंत्र की पंक्ति-पंक्ति में

पंक्ति-पंक्ति के शब्द-शब्द में

शब्द-शब्द के अक्षर स्वर में

दिव्य ज्ञान आलेक प्रदीपित

सत्यं शिवं सुन्दरं शोभित

कपिल कणाद और जैमिन की

स्वानुभूति का अमर प्रकाशन

विशद-विवेचन प्रत्यालोचन

ब्रह्म जगत माया का दर्शन,"

विश्व को श्रीमद्भागवत गीता जैसी अद्भुत रचना भारत ने दी है, जिसका दिव्य ज्ञानालोक समग्र मानव जाति को सद्पथ दिखा रहा है, विश्व को ऐसी अमूल्य धरोहर प्रदान करने वाले देश पर कवि को अभिमान है, वह इंगित करता है कि जब हमारे यहाँ गीता की कल्याणी वाणी गूँज रही थी, तब दुनिया के अन्य देश अज्ञान के कुहासे में डूबे थे:-

"अमर भूमि में

समर भूमि में

धर्म भूमि में

कर्म भूमि में

गूँज उठी गीता की वाणी

मंगलमय जन जन कल्याणी,

अपढ़ अज्ञान विश्व ने पायी

शीश झुकाकर एक धरोहर,

कौन दार्शनिक दे पाया है

अब तक ऐसा जीवन दर्शन,"

जिस दिन हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराये थे, भीषण नर संहार हुआ था, उस क्षण पर जब अटल जी सोचते हैं, तो आहत हो जाते हैं, जिन वैज्ञानिकों ने उन अणु-अस्त्रों का अविष्कार किया था, वे कभी इतने आहत हुए थे या नहीं, यह तो भगवान जाने, पर अटल कितने आहत हुए थे, उन्हें कितनी पीड़ा हुई थी, उसका प्रमाण सामने प्रस्तुत है:-

"किसी रात को

मेरी नींद उचट जाती है

आँख खुल जाती है

मैं सोचने लगता हूँ कि

जिन वैज्ञानिकों ने अणु-अस्त्रों का

अविष्कार किया था

वे हिरोशिमा - नागासाकी के

भीषण नरसंहार के समाचार सुनकर

रात को सोये कैसे होंगे ?

- हिरोशिमा की पीड़ा

भारत में हिन्दी काव्यधारा सन्तों और भक्तों के आदर्शों के रूप में वही है, दर्शन से ओत-प्रोत इस धारा ने कमोवेश सभी को अपने आगोश में लपेटा है, भारत के साधु - संतों के अनुरूप अटल जी का भी दर्शन देखिये -

"जन्म-मरण का अविरत फेरा

जीवन वंजारों का डेरा

आज यहाँ, कल वहाँ कूच है

कौन जानता किधर सवेरा"

कवि का अपना वैयक्तिक-दर्शन भी कितना उदात्त है, निम्न पंक्तियों में जैसे कवि ने जैसे प्रकारान्तर से अपना ही जीवन-आदर्श कविता में व्यक्त किया है-

"पृथ्वी पर

मनुष्य ही ऐसा प्राणी है

जो भीड़ में अकेला और

अकेले में भीड़ से घिरा अनुभव करता है

अंतिम यात्रा के अवसर पर

विदा की वेला में

जब सबका साथ छूटने लगता है

शरीर भी साथ नहीं देता

तब आत्म-ग्लानि से मुक्त

यदि कोई हाथ उठाकर यह कह सकता है

कि उसने जीवन में जो कुछ किया

www.ignited.in

सही समझकर किया

किसी को जानबूझ कर चोट पहुँचाने के लिए नहीं

सहज कर्म समझकर किया

तो अस्तित्व सार्थक है

उसका जीवन सफल है

अस्तित्व की सार्थकता से ही मन को संतोष होता है, यह कवि का सुचिन्तित, सुविचारित और स्वानुभूत निजी जीवन दर्शन है,

अटल जी एक महान चिन्तक होने के साथ-साथ चुटकी लेने में भी पीछे नहीं हैं, कविता हो, चाहे भाषण हों, व्यंग्य-विनोद करना उनका स्वाभाविक गुण है, एक बार इन्दिरा गाँधी ने आपातकाल लगा दिया था, लोगों को घरों से खींच-खींच कर जबरन नसबंदी कर दी जाती थी, कवि ने उस पर व्यंग्य करते हुए अपनी कविता 'आओ मर्दो ना मर्द बनों' लिखी, कविता का एक टुकड़ा देखिये -

"औरत ने काम सम्हाला है

सब कुछ देखा है! भाला है

मुँह खोलो तो जय-जय बोलो

वरना तिहाड़ का ताला है,"

अटल जी उस समय ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में पढ़ते थे, डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' उनके अध्यापक थे, डॉ. सुमन राष्ट्रीय ख्याति के कवि थे, गरीबों और मजदूरों पर लिखते थे, सुमन जी स्वयं समृद्ध थे, घर में सुशील पत्नी थी, उस समय उनकी एक कविता 'जीवन का गान' काफी चर्चित थी, उसमें भी गरीब का दर्द भरा हुआ था, अटल जी अपनी आदत से कहाँ बाज आने वाले थे, उन्होंने सुमन जी के 'गान' पर काव्यात्मक प्रतिक्रिया इस प्रकार व्यक्त की-

"सुन्दर गृह, गृहिणी सुन्दरतर

फिर अभाव का यह कैसा स्वर

कविता कहाँ, कहाँ जीवन है

दिल से निकली तान नहीं है

यह जीवन का गान नहीं है"

अधिक क्या कहूँ, अटल जी की कविता लोगों के दिलों पर छाप छोड़ने वाली कविता है, साम्यवादी भी उनकी कविताओं को उतना ही पसन्द करते हैं, जितना राष्ट्रवादी, उन्हें पढ़ने और सुनने वाले का दिल एक झटके में ही यह मानने को विवश हो जाता है कि अटल जी कोई सामान्य कवि नहीं वल्कि महाकवि हैं, मेरा तो मानना है कि वे महाकवि से भी कहीं अधिक राष्ट्रकवि हैं, राष्ट्रप्रेम की जो अजस्रधारा उनके हृदय में बहती है, वही हृदय से बाहर निकलकर कविताओं में वह उठी है, राष्ट्रकवि के राष्ट्रप्रेम का ही परिणाम है कि वह आज सारे राष्ट्र के दिलों पर छा गया है, यद्यपि हमारे कवि ने कही भी अपना घर नही बनाया है, तथापि जन-जन के दिलों में उनका घर बना हुआ है, अटल जी ने अपना घर भी नहीं बसाया है, किंतु ऐसा कोई घर नहीं, जहाँ वे बसे न हों।

संदर्भ

1. मलिक, योगेंद्र केसिंह य., वी अप्रैल) .बी.1992)। "भारतीय जनता पाटीर्: कांग्रेस के लिए एक विकल्प (आई)?"। एशियाई सर्वेक्षण।

2. घोष, अबंतिका)11 नवंबर 2015)। "भाजपा सदस्यों का बयानः वरिष्ठ नेता ने 1984 के नुकसान को याद किया, वाजपेयी ने पद छोड़ने की पेशकश की" कहा। इंडियन एक्सप्रेस। मूल से 18 अगस्त 2018 को संग्रहीत। 17 अगस्त 2018 को लिया गया।

3. चटर्जी, मानिनी)1 मई 1994)। "द बीजेपीः पॉलिटिकल मोबिलाइजेशन फॉर हिंदुत्व". दक्षिण एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व का तुलनात्मक अध्ययन। 14 (1)ः 14-23. डीओआईः 10.1215ध्07323867-14-1-14। आईएसएसएन 1089-201ग्।

4. "1952 से राज्यसभा के पूर्व सदस्यों की वर्णानुक्रमिक सूची"। राज्यसभा। मूल से 9 जनवरी 2010 को संग्रहीत। 17 अगस्त 2018 को लिया गया।

5. "श्री अटल बिहारी वाजपेयी"। बीजेपी .ओआरजी. से मूल10 जुलाई 2017 को संग्रहीत। 16 अगस्त 2018 को लिया गया।

6. गुप्ता, मोहक)6 अप्रैल 2017)। "बीजेपी स्थापना दिवसः 1984 में 2 सांसदों से सत्ता में पार्टी का

उदय 2014 में 282 हो गया''। इंडिया टुडे। 17 अगस्त 2018 को मूल से संग्रहीत। 17 अगस्त 2018 को लिया गया।

7. ''संघ है आत्मा मेरी (आरएसएस), अटल बिहारी वाजपेयी लिखते हैं''। विश्व संवाद केंद्र। 19 जनवरी 2012। 18 अगस्त 2017 को मूल से संग्रहीत। 24 जुलाई 2017 को लिया गया।

8. ''बाहरी लोग जिन्होंने पीएम पद जीता''। मूल से 12 नवंबर 2016 को संग्रहीत। 24 जुलाई 2017 को लिया गया।

9. जैफ्रेलॉट 1996, पीपी .131-132।

10. चटर्जी, मानिनीय रामचंद्रन, वी).के.7 फरवरी 1998)। ''वाजपेयी और भारत छोड़ो आंदोलन''। फ्रंटलाइन। मूल से 28 सितंबर 2013 को संग्रहीत। 11 नवंबर 2012 को लिया गया।

Corresponding Author

जय प्रकाश शर्मा*

एम.ए. (हिन्दी), बी.एड